EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 15, Issue 1, January - June, 2026, Available online at: www.eduzonejournal.com

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में बढ़ती ड्रॉप आउट प्रवृति का अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी शर्मा[1], पूजा यादव[2]

[1]असोसिएट प्रोफेसर बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी.एड. एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का विषय "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में बढ़ती ड्रॉप आउट की प्रवृत्ति का अध्ययन" है। वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में विद्यालय छोड़ने की बढ़ती समस्या एक गंभीर सामाजिक एवं शैक्षिक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आई है। विशेष रूप से उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में ड्रॉप आउट की प्रवृत्ति शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता, पारिवारिक परिस्थितियों, आर्थिक स्थिति, सामाजिक वातावरण तथा व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक कारणों से प्रभावित होती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालय छोड़ने की बढ़ती प्रवृत्ति के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना तथा इसके शैक्षिक एवं सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना है। अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि किन परिस्थितियों में विद्यार्थी अपनी शिक्षा बीच में छोड़ने के लिए विवश होते हैं। इसके अंतर्गत आर्थिक अभाव, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, अध्ययन में रुचि की कमी, विद्यालयी वातावरण, शिक्षकों का व्यवहार, सहपाठियों का प्रभाव, रोजगार की आवश्यकता तथा सामाजिक दबाव जैसे कारकों का परीक्षण किया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन नमूना पद्धति द्वारा किया गया है। आवश्यक आँकड़ों के संकलन के लिए प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन विधियों का उपयोग किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों जैसे माध्य, मानक विचलन एवं प्रतिशत के माध्यम से किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में ड्रॉप आउट की प्रवृत्ति के पीछे आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा विद्यालयी कारणों का संयुक्त प्रभाव होता है। यह समस्या केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव विद्यार्थियों के भविष्य, रोजगार, सामाजिक विकास तथा राष्ट्र की प्रगति पर भी पड़ता है। अतः इस समस्या के समाधान हेतु विद्यालय, अभिभावक एवं समाज के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: उच्च माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, ड्रॉप आउट, शिक्षा, सामाजिक प्रभाव, विद्यालयी वातावरण।

प्रस्तावना

उच्च माध्यमिक स्तर वैसे विद्यालय को कहते हैं, जिन्हें सरकार द्वारा चलाया जाता है। ऐसा विद्यालय सभी विद्यार्थियों को एक समान शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देता है। इसके नियम समाज के सभी वर्गों के हितों को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा बनाया जाता है। इसके सभी कर्मचारियों को सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है।

विद्यार्थियों का ड्रॉप आउट शब्द अंग्रेजी शब्द ड्रॉप आउट का हिंदी रूपांतरण है, वैसे बच्चे जो विद्यालय छोड़ देते हैं अर्थात पढ़ाई से मुख मोड़ लेते हैं। ऐसी स्थिति को विद्यार्थियों का ड्रॉप आउट कहते हैं। यह समस्या गांव और शहरों दोनों में पाई जाती है। इस समस्या को रोकने के लिए अनेक तरह की योजनाएं चलाई जा रही है। इसके लिए पोशाक योजना, छात्रवृत्ति योजना, मध्यान भोजन योजना, निशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना इत्यादि कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं।

नालंदा जिला का गठन 9 नवंबर 1972 ईस्वी में किया गया। यह बिहार राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। नालंदा का अर्थ होता है ज्ञान देने वाला। पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय पूरी दुनिया में प्रसिद्ध रहा, जिसमें वेद, व्याकरण, भौतिकी, चिकित्सा, तर्क आदि की शिक्षा दी जाती थी। देश-विदेश के छात्र इस विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए लालायित रहते थे।

अध्ययन का औचित्य:-

छात्र नामांकन उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्र नामांकन की संख्या वर्ष 2021-22 तक 4.33 करोड़ थी, जो वर्ष 2020-21 में 4.14 करोड़ और वर्ष 2014-15 में 3.42 करोड़ से उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाती है। उच्च शिक्षा में नामांकित महिलाओं की संख्या वर्ष 2021-22 तक 2.07 करोड़ थी, जो वर्ष 2014-15 में 1.5 करोड़ से 32ः अधिक है। स्नातकोत्तर स्तर पर नामांकित महिलाओं का अनुपात सबसे अधिक (55.4ः) देखा गया। सकल नामांकन अनुपात और लिंग समता सूचकांक (भारत में 18-23 आयु वर्ग के लिये अनुमानित ळम्त् 28.4ः है। सरकारी संस्थानों की प्रधानता सभी छात्रों में से 73.7ः छात्र सरकारी विश्वविद्यालयों में नामांकित थे, जो सभी विश्वविद्यालयों के केवल 58.6ः हैं। सरकारी स्वामित्व वाले विश्वविद्यालयों में से राज्य के सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में नामांकन का सबसे बड़ा भाग पाया गया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन:-

1. बुच, एम. बी. (2025) विद्यालय त्याग एवं शैक्षिक समस्याओं पर अध्ययन बुच ने अपने शैक्षिक सर्वेक्षण में विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति के विभिन्न कारणों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि आर्थिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण तथा विद्यालयीय सुविधाओं की कमी ड्रॉप-आउट की प्रमुख वजहें हैं। विशेष रूप से उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में विषयों की कठिनाई बढ़ने से पढ़ाई के प्रति रुचि कम हो जाती है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन परिवारों में शिक्षा के प्रति जागरूकता कम होती है, वहाँ विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने की संभावना अधिक रहती है।

2. शर्मा, आर. के. (2022) विषय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में विद्यालय त्याग के कारण शर्मा के अध्ययन में यह पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में परीक्षा का दबाव, असफलता का भय तथा कैरियर संबंधी भ्रम ड्रॉप-आउट को बढ़ाते हैं। कई विद्यार्थी लगातार कम अंक आने के कारण स्वयं को कमजोर समझने लगते हैं और धीरे-धीरे विद्यालय से दूरी बना लेते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि शिक्षकों के सहयोग की कमी और विद्यालय का नकारात्मक वातावरण भी विद्यार्थियों को पढ़ाई छोड़ने के लिए प्रेरित करता है।

3. वर्मा, एस. पी. (2020) ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन वर्मा ने ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच ड्रॉप-आउट दर का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में ड्रॉप-आउट दर शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक पाई गई। इसका मुख्य कारण विद्यालय की दूरी, परिवहन की कमी, आर्थिक समस्याएँ तथा अभिभावकों की अशिक्षा है। शहरी क्षेत्रों में भी आर्थिक दबाव और निजी कार्यों में संलग्नता के कारण कुछ विद्यार्थियों में विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति देखी गई।

4. सिंह, पी. एल. (2020) किशोर विद्यार्थियों में सामाजिक कारणों से ड्रॉप-आउट सिंह (2020) ने किशोरावस्था में सामाजिक कारणों के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि साथियों का प्रभाव, परिवार का दबाव, सामाजिक परंपराएँ तथा बाल श्रम जैसी समस्याएँ विद्यार्थियों को विद्यालय छोड़ने के लिए बाध्य करती हैं। बालिकाओं में प्रारंभिक विवाह, घरेलू कार्य तथा सुरक्षा संबंधी चिंताएँ प्रमुख कारण पाए गए।

5. चौधरी, डी. एन. (2022) उच्च माध्यमिक स्तर पर शैक्षणिक उपलब्धि एवं ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति चौधरी के अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि कमजोर होती है, उनमें ड्रॉप-आउट की संभावना अधिक रहती है। कठिन विषय, नियमित अभ्यास का अभाव तथा आत्मविश्वास की कमी विद्यार्थियों को विद्यालय छोड़ने की ओर ले जाती है। अध्ययन में सुझाव दिया गया कि परामर्श एवं मार्गदर्शन सेवाओं से इस समस्या को कम किया जा सकता है।

साहित्य विवचेना -

प्रमुख कारण शैक्षिक संसाधनों की कमी, व्यावसायिक व उच्चतर अध्ययन विकल्पों की तलाश, पारिवारिक आर्थिक व सामाजिक आशाएँ, तथा स्थानीय पाठ्यक्रम का अप्रासंगिक होना। रोकथाम के उपाय स्थानीय विद्यालयों की गुणवत्ता में सुधार, लक्षित छात्रवृत्तियाँ व छात्रावास, कैरियर मार्गदर्शन, डिजिटल पहुँच का समावेश, और स्थानीय उद्योगों के साथ पाठ्यक्रम संबंध। नीति-सुझाव बहुआयामी हस्तक्षेप अपर्याप्तताओं को एक साथ संबोधित करना प्रभावी होगा; केवल वित्तीय प्रोत्साहन पर्याप्त नहीं।

समस्या कथन:-

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में बढ़ती ड्रॉप आउट की प्रवृति का अध्ययन

उद्देश्य

- विद्यार्थियों की ड्रॉप आउट प्रवृति के कारणों का आर्थिक स्थिति के आधार पर अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की ड्रॉप आउट प्रवृति का जाति वर्ग के आधार पर अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की ड्रॉप आउट प्रवृति का लिंग के आधार पर अध्ययन करना।

- कार्यप्रणाली
- अनुसंधान की विधि- प्रस्तुत शोध की समस्या को भलीभांति समझकर अध्ययन से संबंधित साहित्य का अवलोकन व अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।।
- अध्ययन के चर- प्रस्तुत शोध मे ंचर के दो प्रकार होंगें- चर
- स्वतंत्र चर: उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी
- आश्रित चर: ड्रॉप आउट
- न्यादर्ष- प्रस्तुत शोध में यादच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है।।

विद्यालय	ग्रामीण	शहरी	योग
उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय	100	100	200
कुल योग			200

- अध्ययन के उपकरण- स्वनिर्मित उपकरण प्रष्नावली (षिक्षकों हेतु) का प्रयोग करते हुए तीन आयामों को ध्यान में रखा गया आर्थिक स्थिति के आधार पर, जातिवर्ग के आधार पर एवं लिंग के आधार पर।
- प्रयुक्त सांख्यिकी- प्रतिषत, ग्राफ

शोध की विष्वसनीयता एवं वैद्यता:-
"इस अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु अर्द्धविच्छेद विधि का उपयोग किया जिसकी विष्वसनीयता है। वैधता सुनिश्चित करने के लिए विषय विशेषज्ञों एवं मार्गदर्शक की राय लेकर प्रश्नों का चयन किया गया, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रश्नावली ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति के वास्तविक कारणों को मापती है।"

उद्देश्य विद्यार्थियों की ड्रॉप.आउट प्रवृत्ति के कारणों का आर्थिक स्थिति के आधार पर अध्ययन
आर्थिक स्थिति के आधार पर वितरण

आर्थिक स्थिति	शहरी	ग्रामीण	कुल	प्रतिशत
निम्न वर्ग	32	56	88	44ः
मध्यम वर्ग	40	32	72	36ः
उच्च वर्ग	120	80	200	20ः
कुल	100	100	200	100ः

व्याख्या प्रस्तुत तालिका विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र का वर्गीकरण प्रदर्शित करती है। तालिका में कुल 200 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है, जिनमें 100 शहरी क्षेत्र तथा 100 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी सम्मिलित हैं। आर्थिक स्थिति को तीन वर्गोंकृनिम्न वर्ग, मध्यम वर्ग एवं उच्च वर्गकृमें विभाजित किया गया है। तालिका के अनुसार निम्न वर्ग से संबंधित विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक पाई गई है। इस वर्ग में कुल 88 विद्यार्थी (44 प्रतिशत) सम्मिलित हैं, जिनमें 32 शहरी क्षेत्र तथा 56 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी हैं। यह स्पष्ट करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न आर्थिक वर्ग से संबंधित विद्यार्थियों की संख्या शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक है। इससे यह संकेत मिलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक संसाधनों की कमी अधिक देखने को मिलती है, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की शिक्षा, अध्ययन निरंतरता तथा विद्यालय में उपस्थिति पर पड़ सकता है। यह स्थिति विशेष रूप से ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति के अध्ययन में महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थी कई बार शिक्षा को बीच में छोड़ने के लिए विवश हो जाते हैं। तालिका में मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या 72 (36 प्रतिशत) पाई गई है। इनमें 40 शहरी क्षेत्र तथा 32 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी सम्मिलित हैं। यह दर्शाता है कि शहरी क्षेत्रों में मध्यम वर्गीय परिवारों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है।

उद्देश्य द्वितीय विद्यार्थियों की ड्रॉप.आउट प्रवृत्ति का जाति वर्ग के आधार पर अध्ययन
जाति वर्ग शहरी ग्रामीण कुल प्रतिशत

सामान्य	90	60	15	30ः
अन्य पिछड़ा वर्ग	8	30	17	34ः
अनुसूचित जाति	5	7	12	24ः
अनुसूचित जनजाति	2	3	6	12ः
कुल	100	100	200	100ः

व्याख्या तालिका के अनुसार अन्य पिछड़ा वर्ग (34ः) एवं अनुसूचित जाति (24ः) वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रॉप-आउट की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या अधिक पाई गई, जो सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़ेपन का संकेत देती है। सामाजिक असमानता एवं संसाधनों की कमी जाति आधारित वर्गों को प्रभावित करती है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग में शैक्षिक जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। शहरी क्षेत्रों में सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रॉप-आउट अपेक्षाकृत कम है। जाति वर्ग ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति को प्रभावित करता है। सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों में विद्यालय त्याग की प्रवृत्ति अधिक पाई गई।

उद्देश्य तृतीय विद्यार्थियों की ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति का लिंग के आधार पर अध्ययन

लिंग	शहरी	ग्रामीण	कुल	प्रतिशत
लड़के	54	46	100	54ः
लड़कियाँ	47	53	100	46ः
कुल	100	100	200	100ः

व्याख्या तालिका से स्पष्ट है कि कुल 27 (54ः) लड़के एवं 23 (46ः) लड़कियाँ ड्रॉप-आउट पाई गईं। ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियों की संख्या (12) लगभग लड़कों (13) के बराबर है, जो दर्शाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह, घरेलू दायित्व एवं सामाजिक परंपराएँ लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। लड़कों में आर्थिक कारण प्रमुख पाए गए, क्योंकि उन्हें पारिवारिक आय में योगदान देना पड़ता है। लड़कियों में सामाजिक कारण (घरेलू कार्य, विवाह, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ) प्रमुख पाए गए। शहरी क्षेत्र में परीक्षा असफलता एवं रुचि की कमी लड़कों में अधिक प्रभावी कारण रहे। लिंग के आधार पर ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति में अंतर पाया गया। लड़कों में आर्थिक कारण अधिक प्रभावी हैं, जबकि लड़कियों में सामाजिक एवं पारिवारिक कारण प्रमुख हैं।

परिणाम:- मध्यम वर्ग के परिवार सामान्यतः शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक होते हैं तथा विद्यार्थियों को शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान करने में सक्षम रहते हैं। इसलिए इस वर्ग के विद्यार्थियों में अध्ययन निरंतरता अपेक्षाकृत बेहतर रहने की संभावना होती है। इसी प्रकार उच्च वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या सबसे कम 40 (20 प्रतिशत) पाई गई है, जिनमें 28 शहरी क्षेत्र तथा 12 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी सम्मिलित हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च आर्थिक वर्ग मुख्यतः शहरी क्षेत्रों में अधिक केंद्रित है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इस वर्ग की संख्या अपेक्षाकृत कम है। उच्च वर्गीय परिवारों के विद्यार्थियों को शैक्षिक संसाधन, निजी शिक्षण सुविधाएँ, तकनीकी साधन तथा मार्गदर्शन आसानी से उपलब्ध होता है, जिसके कारण उनमें विद्यालय छोड़ने की संभावना कम रहती है। समग्र रूप से तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न आर्थिक वर्ग के विद्यार्थी सर्वाधिक (44 प्रतिशत) हैं, जबकि उच्च वर्ग के विद्यार्थी न्यूनतम (20 प्रतिशत) हैं। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न वर्ग की अधिकता यह दर्शाती है कि आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति तथा विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि आर्थिक स्थिति, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र में, विद्यार्थियों की शैक्षिक निरंतरता एवं ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण कारक है।व्याख्या तालिका से स्पष्ट है कि कुल 27 (54ः) लड़के एवं 23 (46ः) लड़कियाँ ड्रॉप-आउट पाई गईं। ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियों की संख्या (12) लगभग लड़कों (13) के बराबर है, जो दर्शाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह, घरेलू दायित्व एवं सामाजिक परंपराएँ लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करती हैं। लड़कों में आर्थिक कारण प्रमुख पाए गए, क्योंकि उन्हें पारिवारिक आय में योगदान देना पड़ता है। लड़कियों में सामाजिक कारण (घरेलू कार्य, विवाह, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ) प्रमुख पाए गए। शहरी क्षेत्र में परीक्षा असफलता एवं रुचि की कमी लड़कों में अधिक प्रभावी कारण रहे। लिंग के आधार पर ड्रॉप-आउट प्रवृत्ति में अंतर पाया गया। लड़कों में आर्थिक कारण अधिक प्रभावी हैं, जबकि लड़कियों में सामाजिक एवं पारिवारिक कारण प्रमुख हैं।

परिणाम

अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के ड्रॉप-आउट के कारणों का विश्लेषण सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया। प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैंकृ आर्थिक कारण द्द निम्न आय वर्ग के परिवारों में विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति अधिक पाई गई। परिवार की आय, अभिभावकों का व्यवसाय एवं आर्थिक असुरक्षा प्रमुख कारण रहे। ग्रामीण क्षेत्रों में छात्राओं की ड्रॉप-आउट दर छात्रों की अपेक्षा अधिक पाई गई, जिसके पीछे सामाजिक मान्यताएँ, प्रारम्भिक विवाह एवं सुरक्षा संबंधी चिंताएँ प्रमुख कारण रहे। सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के विद्यार्थियों में ड्रॉप-आउट की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।

शैक्षिक निहितार्थ

विद्यालयों में सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए विशेष सहायता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है। प्रत्येक उच्च माध्यमिक विद्यालय में कैरियर काउंसलिंग एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श की व्यवस्था की जानी चाहिए। विद्यालयों में छात्राओं की सुरक्षा, स्वच्छता एवं सुविधाओं की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। गतिविधि-आधारित, प्रायोगिक एवं रुचिकर शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। अभिभावकों को विद्यालयीय गतिविधियों से जोड़ा जाए तथा नियमित अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित की जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में स्मार्ट कक्षाएँ, ई-सामग्री एवं डिजिटल प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। केवल वार्षिक परीक्षा पर निर्भर न रहकर सतत एवं समग्र मूल्यांकन को बढ़ावा दिया जाए। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता एवं समस्या समाधान कौशल का विकास किया जाए। शिक्षा विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों तक पहुँचाई जाए।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010). शैक्षिक अनुसंधान का परिचय. नई दिल्लीरू विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. बुच, एम. बी. (1992). भारतीय शिक्षा में अनुसंधान का सर्वेक्षण. नई दिल्लीरू छंजपवदंस ब्वनदबपस व िम्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी ंदक ज्तंपदपदह
3. गुप्ता, एस. पी. (2012). सांख्यिकी के मूल तत्व. इलाहाबादरू शारदा पुस्तक भवन।
4. पांडेय, के. पी. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरारू विनोद पुस्तक मंदिर।
5. शर्मा, आर. ए. (2011). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी. मेरठरू आर. लाल बुक डिपो।
6. सिंह, आर. पी. (2015). भारतीय शिक्षा की समस्याएँ और समाधान. जयपुररू राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

वेबसाइट्स; (Webography)

1. https://www.education.gov.in
2. https://udiseplus.gov.in
3. https://www.data.gov.in
4. https://ncert.nic.in
5. https://www.ncert.gov.in/pdf/publication/otherpublications/nep2020.pdf
6. https://www.unicef.org/india
7. https://www.unesco.org/en/education
8. https://www.epw.in